RNI No. MPHIN/2015/64451 डाक पंजीयन क्र. MP/IDC/1525/2019-2021 IPT डाक द्वारा प्रेषण प्रति शुक्रवार indianplasttimes@gmail.com

www.Indianplasttimes.in

इंडियन प्लास्ट टाइम्स

■ INDORE ■ 15 DECEMBER TO 21 DECEMBER 2021 ■ प्रति बुधवार ■ वर्ष 07 ■ अंक 15 ■ पृष्ठ 8 ■ कीमत 5 रु.

Inside News

कट्टर इस्लाम की पैरोकारी एर्दोगन को पड़ी भारी? टर्किश लीरा में रिकॉर्ड गिरावट से अर्थव्यवस्था पर संकट Page 3

ग्लोबल वार्मिंग रोके बिना भीषण गर्मी से 1.6 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर का होगा नुकसान : अध्ययन Page 5

स्कोडा ऑटो इंडिया ने भारत के औरंगाबाद में शुरू किया नई कोडियाक का उत्पादन Page 7

editoria!

सुधार का दीपक

भारत में धर्मस्थलों और तीर्थों के विकास की किसी भी पहल की प्रशंसा होनी ही चाहिए। काशी में विश्वनाथ धाम का जो विकास हुआ है, उसके लिए भगवान शिव की नगरी काशी के सांसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पूरा श्रेय दिया जाना चाहिए। धीरे-धीरे अतिक्रमण और व्यावसायिक दबाव की वजह से जिस तरह से विश्वनाथ धाम की उपेक्षा बढ़ती जा रही थी, जैसे-जैसे वहां पहुंचने की गलियां संकरी होती जा रही थीं, वैसे-वैसे काशी का आकर्षण भी कहीं न कहीं प्रभावित हो रहा था। धाम की ओर जाने वाली गलियों का चौड़ीकरण नामुमकिन लगता था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यहां से सांसद बनने से यह काम आसान हुआ। उन्होंने बिल्कुल सही कहा है कि यदि सोच लिया जाए, तो असंभव कुछ भी नहीं है। प्रधानमंत्री की इस परियोजना के मार्ग में कतई कम अड़चनें नहीं थीं, दुकानों, लोगों को विस्थापित किया गया, दृढ़ता के साथ कुछ धर्मस्थल भी हटाए गए, चंद लोग तो आज भी राजनीतिक कारणों से विरोध जता रहे हैं, लेकिन एक भव्य मंदिर परिसर के रूप में परिणाम दुनिया के सामने है। काशी विश्वनाथ के परिसर में श्रद्धालुओं के लिए बहुत बड़ी जगह निकल आई है, जिससे इस धाम के आकर्षण में चार चांद लगना तय है। काशी से प्रधानमंत्री ने जो संदेश दिया है, उसे केवल चुनावी नफा-नुकसान के नजरिये से नहीं देखना चाहिए। प्रधानमंत्री का यह कहना खास मायने रखता है कि सदियों की गुलामी के चलते भारत को जिस हीन भावना से भर दिया गया था, आज का भारत उससे बाहर निकल रहा है। वाकई यहां अब कोई संदेह शेष नहीं है कि यह सरकार देश व समाज को बदल रही है। प्रधानमंत्री अपने आलोचकों को खूब जानते हैं, अतः उन्होंने उचित ही कहा है कि आज का भारत सिर्फ सोमनाथ के मंदिर का सौंदर्यीकरण ही नहीं कर रहा, समुंदर में हजारों किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर भी बिछा रहा है। आज का भारत सिर्फ बाबा केदारनाथ धाम का जीर्णोद्धार ही नहीं कर रहा, आज का भारत सिर्फ अयोध्या में प्रभु श्रीराम का मंदिर ही नहीं बना रहा, हर जिले में मेडिकल कॉलेज भी बना रहा है। आज का भारत सिर्फ बाबा विश्वनाथ धाम को भव्य रूप ही नहीं दे रहा है, गरीबों को पक्के मकान भी बनाकर दे रहा है। मतलब एक ही साथ विरासत और विकास की चिंता है। हिंदुत्व की चिंता है, तो विकास की भी पूरी फिक्र है। प्रधानमंत्री ने काशी से पूरा लेखा-जोखा दिया है कि कैसे धर्मक्षेत्रों और नगरों में सुधार के लिए काम हो रहे हैं। कुल मिलाकर, पूरे देश में गौरवशाली धार्मिक प्रतीकों का पुनरोद्धार ऐसे किया जा रहा है, जैसे पहले कभी नहीं किया गया था। इन सुधारों से न केवल आध्यात्मिक, बल्कि सामाजिक और आर्थिक लाभ के भी रास्ते खुल सकते हैं। हालांकि, भारत में अब भी अनेक तीर्थ ऐसे हैं, जो गंदगी का अड्डा बने हुए हैं। जहां खाद्य में मिलावट, ठगी, छीनाझपटी, चोरी की घटनाएं खूब होती हैं। नैना देवी का हादसा हो या जोधपुर की चामुंडा माता मंदिर के पास का हादसा, संकरी गलियों में भगदड़ कितनी जानलेवा साबित हुई है, यह अलग से बताने की जरूरत नहीं है। देश में बढ़ती आबादी और जीविका की तलाश में कोने-कोने में बाजार सजाने-लगाने की परिपाटी दुखद है। अब काशी में अगर सुधार का दीपक जल उठा है, तो उसकी रोशनी तमाम तीर्थों में भी सुधार के प्रति समर्पण बढ़ाएगी।

बार-बार अपील पर भी ध्यान नहीं दे रहे तेल उत्पादक देश

कीमतें बढ़ाने के लिए आपूर्ति घटा रहा ओपेक

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें बढ़ाने के लिए तेल उत्पादक देश बनावटी रूप से आपूर्ति घटा रहे हैं। पेट्रोलियम राज्यमंत्री रामेश्वर तेली ने सोमवार को राज्यसभा में बताया कि ओपेक व अन्य सहयोगी देशों की मनमानी से पेट्रोल-डीजल की खुदरा कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं थी।

मंत्री ने कहा, जनता को राहत देने के लिए पहली बार हमें रणनीतिक रिजर्व तेल का इस्तेमाल करना पड़ा। अमेरिका, चीन, जापान, कोरिया के साथ मिलकर भारत ने 48 लाख बैरल कच्चा तेल वैश्विक बाजार में जारी किया। ओपेक व रूस सहित अन्य सहयोगियों ने 4 लाख बैरल बढ़ाने की बात कही है, लेकिन इससे ज्यादा राहत नहीं मिलेगी। तेल खपत कोविड पूर्व स्तर तक पहुंच गई है, लिहाजा ओपेक को भी आपूर्ति 2019 के स्तर तक बढ़ानी होगी।

देश में कुल 74 दिन का भंडार

पेट्रोलियम राज्यमंत्री ने सदन को बताया कि देश में 3.8 करोड़ बैरल कच्चे तेल का रणनीतिक भंडार है, जो 9.5 दिन की खपत के बराबर होगा। तेल विपणन कंपनियों के पास 64.5 दिन की खपत के बराबर भंडार है। इस तरह, देश में कच्चे तेल का कुल भंडार 74 दिन के बराबर है, जबकि हम अपनी कुल खपत का 85 फीसदी तेल आयात करते हैं।

पेट्रोल-डीजल पर टैक्स से सरकार को हुई 8.02 लाख करोड़ की कमाई

संसद में सरकार ने दिया 3 साल का हिसाब

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

पेट्रोल-डीजल की महंगाई जोरों पर है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को संसद में बताया कि पेट्रोल-डीजल से सरकार को कितनी कमाई हुई है। वित्त मंत्री के मुताबिक पिछले तीन वित्तीय वर्ष में सरकार ने पेट्रोल-डीजल के टैक्स से 8.02 लाख करोड़ रुपये की कमाई की है। सीतारमण ने कहा, वित्तीय वर्ष 2021 में ही सरकार को टैक्स से 3.71 लाख करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है। संसद में दिए एक जवाब में केंद्रीय वित्त मंत्री ने यह बात कही।

संसद में कुछ सांसदों ने पेट्रोल-डीजल की महंगाई का सवाल उठाया और सरकार से पूछा कि इसे कम करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं। सासंदों ने यह भी पूछा कि सरकार को ईंधन बेचकर टैक्स के रूप में कितने रुपये की कमाई हुई है। एक सांसद ने पिछले तीन वित्तीय वर्ष में टैक्स और एक्साइज ड्यूटी से हुई कमाई के बारे में सवाल पूछा। इस पर केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा कि पिछले तीन वित्तीय वर्ष में सरकार को टैक्स से 8.02 लाख करोड़ रुपये की कमाई हुई है जबकि केवल इसी वित्तीय वर्ष में 3.71 लाख करोड़ से ज्यादा का राजस्व प्राप्त हुआ है।

कितना घटा-बढ़ा टैक्स

5 अक्टूबर 2018 को पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी 19.48 पैसे थी जिसे 4 नवंबर 2021 को बढ़ाकर 27.90 रुपया कर दिया गया। इसी अवधि में डीजल पर ड्यूटी को 15.33 रुपये से बढ़ाकर 21।80 रुपये कर दिया गया। निर्मला सीतारमण ने संसद में एक लिखित जवाब में यह जानकारी दी। इस दौरान कुछ समय के लिए पेट्रोल पर एक्साइज को कम किया गया और यह 5 अक्टूबर 2018 को 19.48 रुपये से घटकर 6 जुलाई 2019 को 17.98 रुपये पर आ गया। इसी तरह डीजल पर एक्साइज को 15.33 रुपये से घटाकर 13.83 रुपये पर लाया गया।

2 फरवरी 2021 तक पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में बढ़ोतरी देखी गई और पेट्रोल और डीजल के लिए यह क्रमशः 32.98 और 31.83 रुपये दर्ज किया गया। इस अवधि के बाद गिरावट शुरू हुई और

राज्यों में अलग-अलग वैट वसूला जाता है

राज्य	पेट्रोल (%)	डीजल (%)
बिहार	26	19.0
चंडीगढ़	22.45	14.0
छत्तीसगढ़	25.00	25.00
दिल्ली	30.00	16.75
गुजरात	20.10	20.20
हरियाणा	25.00	16.40
मध्य प्रदेश	33	23
झारखंड	22	22
राजस्थान	36	26
हिमाचल प्रदेश	25	14
पंजाब	24.79	15.94
महाराष्ट्र	25	21

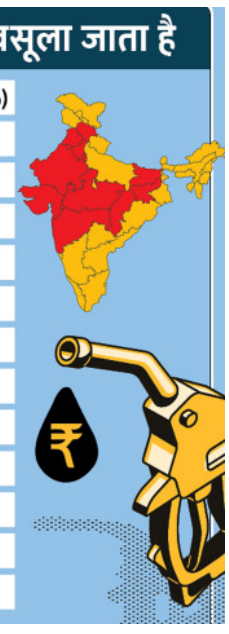

4 नवंबर, 2021 को पेट्रोल का एक्साइज 27.90 रुपये और डीजल का एक्साइज 21.80 रुपये दर्ज किया गया। 'पिछले तीन वर्षों के दौरान पेट्रोल और डीजल से जुटाए गए सेस सहित केंद्रीय उत्पाद शुल्क हैं: 2018-19 में 2,10,282 करोड़ रुपये, 2019-20 में 2,19,750 करोड़ रुपये और 2020-21 में 3,71,908 करोड़ रुपये'। सीतारमण ने संसद में यह बात कही।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पेट्रोल-डीजल पर टैक्स से सरकार को हुई 8.02 लाख करोड़ की कमाई

(पेज 1 का शेष)

दिवाली से पहले मिली राहत

इस साल 4 नवंबर को दिवाली से ठीक पहले, सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में क्रमशः 5 रुपये और 10 रुपये प्रति लीटर की कमी की। इसके बाद कई राज्यों ने दोनों ईंधन पर मूल्य वर्धित कर (वैट) में कटौती की घोषणा की। इसके बाद तेलों के दाम में हल्की सी गिरावट देखी जा रही है, लेकिन अब भी पहले की तुलना में महंगाई बहुत अधिक है। विपक्षी दल इसका लगातार विरोध कर रहे हैं। इसके बारे में सरकार का कहना है कि वैश्विक बाजारों में कच्चे तेल की महंगाई के चलते घरेलू बाजार में भी महंगाई देखी जा रही है।

सरकार का संसद में बयान

सरकार ने सोमवार को संसद में कहा कि तेल निर्यात करने वाले देश मांग से कम सप्लाई कर रहे हैं जिससे कि तेल की एक कृत्रिम कमी पैदा हुई है। डिमांड और सप्लाई के चलते ही तेलों के दाम में वृद्धि देखी जा रही है। अभी हाल में सरकार ने तेल की कीमतों पर नियंत्रण रखने के लिए 50 लाख टन तेल जारी किया था। ये तेल स्ट्रेटजिक रिजर्व से जारी किए गए। उसके पहले अमेरिका ने भारत और जापान सहित कई देशों से आग्रह किया था कि तेलों के दाम काबू में रखने के लिए रिजर्व से तेल निकाले जाएं। इस काम में चीन, जापान, अमेरिका और कोरिया साथ आए और सभी देशों ने अपने रिजर्व से इमरजेंसी तेल जारी किया।

रिजर्व से तेल इसलिए निकाले गए ताकि बाजार में तेल की सप्लाई बढ़े और कीमतों पर काबू रखा जाए। भारत में ऐसा पहली बार हुआ कि 50 लाख टन या 380 लाख बैरल तेल रिजर्व से निकाले गए। ये कच्चे तेल भारत के पूर्वी और पश्चिमी तट पर बने तेल भंडारों से निकाले गए। इसी तरह अमेरिका भी 500 लाख बैरल कच्चा तेल अपने रिजर्व से जारी कर रहा है।

फिर इस बिजनस में धाक जमाने की तैयारी में टाटा ग्रुप

23 साल पहले कह दिया था 'टाटा'

नई दिल्ली। एजेंसी

ब्यूटी और फैशन रिटेलर नायका की चमत्कारिक सफलता ने देश के दिग्गज औद्योगिक घराने टाटा ग्रुप का ध्यान ब्यूटी बिजनस की तरफ खींचा है। टाटा ग्रुप फिर इस बिजनस में अपनी धाक जमाने की योजना बना रहा है। ग्रुप ने 23 साल पहले ही इस बिजनस को अलविदा कर दिया था। लेकिन देश में कॉस्मेटिक्स का बाजार तेजी से बढ़ रहा है और साल 2025 तक इसके 20 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

टाटा ग्रुप की रिटेल स्टोर्स चलाने वाली कंपनी ट्रेंट लिमिटेड के नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन नोएल टाटा एक इंटरव्यू में कहा कि अब कंपनी को जोर फुटवियर और अंडरवियर के साथ-साथ ब्यूटी प्रॉडक्ट्स पर रहेगा। उन्होंने कहा कि रिटेल में इनमें ग्रोथ की संभावना है।

2025 तक दोगुना हो जाएगा मार्केट

Statista के आंकड़ों के मुताबिक 2025 तक देश में कॉस्मेटिक्स और ब्यूटी मार्केट 20 अरब डॉलर पहुंच सकता है जो 2017 में 11 अरब डॉलर का था। कोरोना काल में इस मार्केट में काफी ग्रोथ देखने को मिली है। इसमें मुंबई की ऑनलाइन रिटेलर नायका की अहम भूमिका है। हाल में इस स्टार्टअप कंपनी का आईपीओ जबरदस्त हिट रहा था और कंपनी की मार्केट वैल्यू 13 अरब डॉलर पहुंच चुकी है। कुछ दशक पहले तक ब्यूटी सेक्टर में टाटा ग्रुप की तूती बोलती थी। नोएल टाटा की मां सिमोन टाटा ने 1953 में लैक्मे (Lakme) ब्रांड की स्थापना में अहम भूमिका निभाई थी। लेकिन टाटा ने 1998 में लैक्मे को यूनिलीवर पीएलसी की लोकल यूनिट को बेच दिया था। 2014 में कंपनी ने फिर से इस सेक्टर में एंट्री मारी थी लेकिन अब कंपनी इसे गंभीरता से ले रही है।

क्या है कंपनी की योजना

ब्यूटी, फुटवियर और अंडरवियर कैटगरी से ट्रेंट का रेवेन्यू महज 10 करोड़ डॉलर है जबकि इसका कुल मार्केट 30 अरब डॉलर का है। WealthMills Securities Pvt में इक्विटी स्ट्रैटजिस्ट Kranthi Bathini का कहना है कि ये तीन सेगमेंट्स टाटा के लिए फायदे का सौदा साबित हो सकते हैं क्योंकि वह तेजी से अपने स्टोर्स और डिस्ट्रिब्यूशन चैनल्स का विस्तार कर रहा है। इनमें कंप्टीशन बहुत ज्यादा है लेकिन इकॉनमी के पटरी पर लौटने के साथ ही खपत भी तेजी से बढ़ रही है।

टाटा ने कहा कि ट्रेंट इनहाउस कॉस्मेटिक्स ब्रांड्स की नई लाइन्स बना रही है जो ग्रोथ का इंजन हो सकती हैं। इन प्रॉडक्ट्स को कंपनी की रिटेल स्टोर चेन Westside के जरिए बेचा जा सकता है या स्टैंडअलोन स्टोर्स और डिजिटल चैनलों से इनकी बिक्री हो सकती है। नोएल टाटा रतन टाटा के सौतेले भाई हैं और रतन टाटा ट्रस्ट बोर्ड में ट्रस्टी हैं। वह पिछले 2 दशक से भी अधिक समय से टाटा ग्रुप के रिटेल ऑपरेशंस को देख रहे हैं।

बैंक की तरह एनबीएफसी पर भी लागू होगा पीसीए प्रारूप

रिजर्व बैंक ने नियमों को संशोधित किया

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनियों (एनबीएफसी) पर निगरानी बढ़ाने का फैसला किया है। इसके तहत बैंकों की तर्ज पर प्रॉम्प्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) के संशोधित दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। रिजर्व बैंक ने इस संबंध में एक बयान जारी कर कहा है कि एनबीएफसी के लिए संशोधित पीसीए मानक 1 अक्तूबर, 2022 से प्रभावी होंगे।

इन्हें रखा गया है दायरे से बाहर

आरबीआई के बयान के मुताबिक, सार्वजनिक स्वामित्व वाली एनबीएफसी को इसके दायरे से बाहर रखा गया है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि संशोधित पीसीए प्रारूप जमा स्वीकार करने वाली सभी एनबीएफसी, जमा नहीं लेने वाली एनबीएफसी, निवेश एवं साख कंपनियों और सूक्ष्म वित्त संस्थानों पर भी लागू होंगे। जबकि सार्वजनिक कोष स्वीकार नहीं करने वाली एनबीएफसी इसके दायरे से बाहर रहेंगी। रिजर्व बैंक ने कहा कि एनबीएफसी पर सख्त पीसीए मानक लागू होने की स्थिति में डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन पर रोक लगने के साथ ही गारंटी देने से भी इन्हें रोका जाएगा। इसके अलावा रणनीति, शासन, प्रमुख पूंजी, ऋण जोखिम में गड़बड़ी पर भी विशेष कदम उठाए जाएंगे।

बैंकों पर पहले से लागू पीसीए प्रारूप

गौरतलब है कि आरबीआई इससे पहले बैंकों के लिए पीसीए प्रारूप लागू कर चुका है जिसमें बकाया कर्ज के बोझ तले दबे बैंकों पर सख्त निगरानी लागू की गई है। पीसीए प्रारूप के तहत दरअसल, बैंकों को नए कर्ज जारी करने और भर्तियों से भी रोका जाता है। आरबीआई को जब लगता है कि किसी बैंक के पास जोखिम का सामना करने को पर्याप्त पूंजी नहीं है, उधार दिए धन से आय नहीं हो रही और मुनाफा नहीं हो रहा है तो उस बैंक को पीसीए में डाल दिया जाता है, ताकि उसकी वित्तीय स्थिति सुधारने के लिए तत्काल कदम उठाए जा सकें।

पीसीए फ्रेमवर्क को इस तरह समझें

आरबीआई के पीसीए फ्रेमवर्क के तहत कुछ खास मापदंडों के आधार पर बैंकों की वित्तीय सेहत की निगरानी की जाती है। संशोधित ढांचे में निगरानी के लिए कैपिटल, परिसंपत्ति गुणवत्ता और लेवरेज जैसे मापदंड शामिल होंगे। आमतौर पर एक बैंक को उसके सालाना नतीजे और आरबीआई की ओर से की गई सुपरवाइजरी मूल्यांकन के आधार पर पीसीए फ्रेमवर्क में डाला जाता है।

मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना को पांच वर्ष बढ़ाने को मंजूरी दी

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना पीएमकेएसवाई को वर्ष 2021 से पांच वर्ष बढ़ाकर वर्ष 2026 तक करने के प्रस्ताव को बुधवार को मंजूरी दे दी। इस पर कुल लागत 93,068 करोड़ रूपये आने का अनुमान है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में यह निर्णय किया गया। सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर और जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक के बाद संवाददाताओं को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना को 2021-22 से 2025-26 तक जारी रखने को मंजूरी दी है जिससे करीब 22 लाख किसानों को फायदा होगा जिसमें 2.5 लाख अनुसूचित जाति और 2 लाख अनुसूचित जनजाति वर्ग के किसान हैं। सरकारी बयान के अनुसार, इस पर कुल लागत 93,068 करोड़ रूपये आने का अनुमान है। इसमें कहा गया है कि त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम के तहत शामिल नयी परियोजनाओं सहित 60 चल रहीं परियोजनाओं को पूरा करने पर ध्यान दिया जायेगा। बयान के अनुसार, हर खेत को पानी खंड के तहत सतही जल स्रोतों के माध्यम से जल निकायों के पुनर्जीवन के तहत 4.5 लाख हेक्टेयर सिंचाई तथा उपयुक्त ब्लाकों में भूजल सिंचाई के तहत 1.5 लाख हेक्टेयर की सिंचाई हो सकेगी।

कनॉट प्लेस अब दुनिया का 17वां सबसे महंगा ऑफिस मार्केट, जेएलएल ने बताया दुनिया का हाल

कनॉट प्लेस अपनी रैंकिंग में सुधार करते हुए अब दुनिया का 17वां सबसे महंगा ऑफिस मार्केट बन गया। गत वर्ष ये 25वां सबसे महंगा ऑफिस मार्केट था। प्रॉपर्टी कंसलटेंट जेएलएल के मुताबिक यहां प्रति वर्ग फुट स्थान की ऑक्यूपेंसी के लिए सालाना 109 यूएस डॉलर तक चुकाने पड़ सकते हैं। इस लागत में अन्य घटक भी शामिल हैं। प्रीमियम ऑफिस रेंट ट्रेकर पोर्ट रिपार्ट में जेएलएल ने कहा है कि न्यूयॉर्क का मिडटाउन और हांगकांग-सेंट्रल दुनिया के सबसे महंगे ऑफिस स्पेस वाले स्थान हैं। ये दोनों दुनियाभर में पहले पायदान पर हैं। यहां पर एक वर्ग फुट ऑफिस स्पेस के लिए आपको सालाना 261 यूएस डॉलर चुकाने पड़ेंगे। वहीं बीजिंग-फाइनेंस स्ट्रीट, लंदन-वेस्ट एंड और सिलिकॉन वैली इस मामले वैश्विक सूची में टॉप फाइव में शामिल हैं। इस सूची में एशिया प्रशांत क्षेत्र दस प्रमुख ऑफिस मार्केट में छठे स्थान पर है। अगर दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस की बात करें तो कई शानदार इमारतें हैं और देश का सबसे महंगा ऑफिस मार्केट है। यानी यहां ऑफिस लेने के लिए आपको सबसे ज्यादा राशि चुकानी होगी। जेएलएल इंडिया की ओर से जारी बयान के अनुसार कनॉट प्लेस ने पिछले साल की अपनी रैंकिंग में सुधार किया है और अब ये 17वें पायदान पर है। यहां एक वर्ग फुट स्पेस के लिए आपको 109 डॉलर चुकाने पड़ेंगे जो सान फ्रांसिस्को से भी ज्यादा है। इस रिपोर्ट में दुनिया के 112 शहरों के 127 ऑफिस मार्केट को शामिल किया गया है। इसके मुताबिक मुंबई का बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स बीकेसी 102 यूएस डॉलर प्रति वर्ग फुट लागत के साथ देश में दूसरा सबसे महंगा ऑफिस मार्केट है। अपनी रैंक में गिरावट के साथ ये 23वें स्थान पर है। वहीं 58 यूएस डॉलर प्रति वर्ग फुट लागत के साथ मुंबई का सेंट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट सीबीडी 63वें स्थान पर है। बेंगलुरु में एक वर्ग फुट ऑफिस स्पेस के लिए आपको सालाना 51 यूएस डॉलर चुकाने होंगे लेकिन ये शहर पिछले साल के मुकाबले 74 से खिसककर 77वें स्थान पर पहुंच गया है। दिल्ली एनसीआर का गुरुग्राम 91वें स्थान से खिसककर 83वें स्थान पर पहुंच गया है। यहां फिलहाल एक वर्ग फुट ऑफिस स्पेस की लागत 44 यूएस डॉलर है जो गत वर्ष 48 यूएस डॉलर थी। इन सबसे अलग चेन्नई में एक वर्ग फुट के लिए आपको 21 यूएस डॉलर प्रति वर्ष चुकाने पड़ सकते हैं। ये दुनिया भर में चौथा सबसे किफायती ऑफिस मार्केट है।

कट्टर इस्लाम की पैरोकारी एर्दोगन को पड़ी भारी? टर्किश लीरा में रिकॉर्ड गिरावट से अर्थव्यवस्था पर संकट

इस्तांबुल। एजेंसी

तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन को कट्टर इस्लाम की पैरोकारी करना भारी पड़ने लगा है। इस्लाम के नाम पर इमरान खान के साथ दोस्ती की कसमें खा रहे एर्दोगन तुर्की को भी पाकिस्तान की राह पर लेकर जा रहे हैं। एर्दोगन की जोखिम भरी नई आर्थिक नीति और दरों में कटौती की संभावनाओं के कारण तुर्की की मुद्रा लीरा सोमवार को डॉलर के मुकाबले 7 फीसदी तक गिर गई। पिछले एक साल से लीरा में जारी गिरावट के कारण तुर्की की अर्थव्यवस्था को तगड़ा झटका लगा है। इतना ही नहीं एफएटीएफ की निगरानी सूची में आने के कारण तुर्की को बाहरी निवेश लाने में भी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

एक डॉलर की कीमत 13.83 लीरा तक पहुंची

वर्तमान में एक डॉलर की कीमत 13.83 लीरा है। लीरा में लगातार अवमूल्यन के कारण तुर्की के केंद्रीय बैंक ने दो सप्ताह में अपने चौथे बाजार हस्तक्षेप की घोषणा की है। डॉलर की कीमत बढ़ने के कारण तुर्की के आयात-निर्यात और विदेशी मुद्रा भंडार पर भी नकारात्मक असर दिख रहा है। अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के बढ़ने के कारण आम जनता पर महंगाई का बोझ पड़ रहा है।

वित्तमंत्री तक को हटा चुके हैं एर्दोगन

लीरा के लगातार अवमूल्यन को रोकने में विफल होने के कारण एर्दोगन ने दिसंबर के शुरुआत में ही तुर्की के वित्तमंत्री को हटा दिया था। आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित एक घोषणा के अनुसार, एर्दोगनन ने नुरेद्दीन नेबाती को वित्त मंत्री बनाया है जो पहले उप मंत्री थे। इस साल की शुरुआत से अब तक तुर्की की मुद्रा का करीब 40 प्रतिशत अवमूल्यन हो चुका है।

महंगाई के लिए ऊंची ब्याज दरों को दोष दे रहे एर्दोगन

एर्दोगन ने लगातार तर्क दिया है कि ऊंची ब्याज दरों से महंगाई बढ़ती है जबकि पारंपरिक अर्थशास्त्र के हिसाब से यह उलट सोच है। राष्ट्रपति ब्याज दरों में अंतर के कारण 2019 से सेंट्रल बैंक के तीन गर्वनर को हटा चुके हैं। पिछले हफ्ते के आंकड़ों से पता चला है कि केंद्रीय बैंक का अंतरराष्ट्रीय भंडार गिरकर 22.47 अरब डॉलर हो गया है। ट्रेडवेब के आंकड़ों के अनुसार, तुर्की का सॉवरेन डॉलर बांड 2034 के अंक में 0.8 सेंट नीचे गिर गया।

अमेरिकी पाबंदियों से तुर्की की अर्थव्यवस्था संकट में

अमेरिका की पाबंदियों के कारण तुर्की की अर्थव्यवस्था इन दिनों संकट से गुजर रही है। जो बाइडेन ने अपने शपथग्रहण के बाद सबसे पहले तुर्की पर ही आर्थिक प्रतिबंधों का ऐलान किया था। तुर्की अमेरिका की अगुवाई वाले सैन्य संगठन नाटो का हिस्सा है। उसने रूस से एस-400 वायु रक्षा प्रणाली की खरीद की है। तुर्की ने इस प्रणाली का परीक्षण किया है, जिसके बाद अमेरिका ने तुर्की के ऊपर आर्थिक पाबंदियां लगा दी थी।

एर्दोगन का पाकिस्तान प्रेम किसी से छिपा नहीं

तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैयप एर्दोगन का पाकिस्तान प्रेम किसी से छिपा हुआ नहीं है। एर्दोगन पाकिस्तान और चीन की सहायता से खुद को इस्लामिक देशों का नया खलीफा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यही कारण है कि वह आए दिन भारत के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं। पिछले साल जब संयुक्त राष्ट्र महासभा का आयोजन किया गया था, तब एर्दोगन ने कश्मीर मुद्दा उठाते हुए इसपर पाकिस्तान का हक बताया था।

डीएसपी इनवेस्टमेंट मैनेजर्स ने डीएसपी निफ्टी मिडकैप ईटीएफ लॉन्च किया

मुंबई। आईपीटी नेटवक

डीएसपी इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स ने निफ्टी मिडकैप 150 क्वॉलिटी 50 इंडेक्स - डीएसपी निफ्टी मिडकैप 150 क्वॉलिटी 50 ईटीएफ के साथ-साथ डीएसपी निफ्टी 50 ईटीएफ के आधार पर भारतीय म्युचुअल फंड उद्योग में पहला पैसिव प्रॉडक्ट लॉन्च करने की घोषणा की है। यह नया गुणवत्ता केंद्रित मिड कैप ईटीएफ निवेशकों को उच्च मुनाफे की क्षमता, कम लेवरेज और तुलनात्मोक रूप से स्थित आय के साथ मिड-कैप कंपनियों में निवेश करने का विकल्पक देता है। दूसरा नया उत्पाद, डीएसपी निफ्टी 50 ईटीएफ निफ्टी 50 इंडेक्स से सभी 50 कंपनियों में इंडेक्स के अनुरूप निवेश करेगा। डीएसपी निफ्टी मिडकैप 150 क्वॉलिटी 50 ईटीएफ निफ्टी मिडकैप 150 क्वॉलिटी 50 इंडेक्स का अनुसरण करते हुए शून्य-पूर्वाग्रह और नियम-आधारित रणनीति का पालन करता है, जिसमें फंड मैनेजर की 'सोच' या भावनाओं को शामिल नहीं किया जाता है। यह सूचकांक मूल निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स से 50 कंपनियों का चयन करता है, जो 'क्वॉलिटी स्कोर' के आधार पर इक्विटी पर रिटर्न, वित्तीय मुनाफा वित्तीय सेवा कंपनियों को छोड़कर और पिछले पांच वित्तीय वर्ष के दौरान किए प्रत्येक स्टॉक की प्रति शेयर आय ईपीएस जैसे मानकों का उपयोग करता है। इसलिए ईटीएफ निवेशकों को कल के संभावित विजेता शेयरों का स्वामित्व हासिल करने का आसान तरीका प्रदान करता है, जो उन्हें इस उच्च-जोखिम, उच्च-रिटर्न रणनीति का उपयोग करके 'बड़ा' रिटर्न अर्जित करने का मौका देता है। एक पैसिव फंड होने के कारण, इसका खर्च अनुपात सबसे सक्रिय रूप से प्रबंधित मिड-कैप फंडों की तुलना में कम होगा।

डीएसपी निफ्टी 50 ईटीएफ निफ्टी 50 इंडेक्स को दोहराता है, जो मार्केट-कैप आधारित रणनीति का अनुसरण करता है। दूसरे शब्दों में, पोर्टफोलियो में प्रत्येक कंपनी को फ्री-फ्लोट बाजार पूंजीकरण के आधार पर भार दिया गया है। डीएसपी निफ्टी 50 ईटीएफ शेयर बाजारों में नए या शुरुआती स्तर के म्युचुअल फंड निवेशकों के लिए उपयुक्त है। अनुभवी निवेशक जो इक्विटी मार्केट में निवेश करने के लिए कम लागत वाले तरीकों की तलाश कर रहे हैं, वे भी ईटीएफ में निवेश करने पर विचार कर सकते हैं।

एनटीपीसी ने देश की पहली हरित हाइड्रोजन आधारित माइक्रोग्रिड परियोजना शुरू की

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी एनटीपीसी ने आंध्र प्रदेश के सिम्हाद्री में 'एकल ईंधन-सेल आधारित हरित हाइड्रोजन माइक्रो-ग्रिड' परियोजना की शुरुआत की है। बिजली मंत्रालय ने बुधवार को एक बयान में कहा, ''एनटीपीसी ने सिम्हाद्री विशाखापत्तनम के पास कंपनी के गेस्ट हाउस में इलेक्ट्रोलाइजर का उपयोग करके हाइड्रोजन उत्पादन के साथ ही एकल ईंधन-सेल आधारित माइक्रो-ग्रिड' परियोजना की शुरुआत की है।'' बयान में कहा गया है कि यह भारत की पहली और दुनिया की सबसे बड़ी हरित हाइड्रोजन आधारित ऊर्जा भंडारण परियोजना में से एक होगी। इसकी बड़े पैमाने पर हाइड्रोजन ऊर्जा भंडारण परियोजनाओं में अग्रणी भूमिका होगी और यह देश के विभिन्न 'ऑफ ग्रिड' हां ग्रिड की पहुंच नहीं हो पायी है तथा महत्वपूर्ण स्थानों में माइक्रोग्रिड की स्थापना एवं अध्ययन के लिए उपयोगी साबित होगी। परियोजना के तहत समीप के जलाशय में स्थित 'फ्लोटिंग' सौर परियोजना से जरूरी बिजली लेकर उन्नत 240 किलोवॉट सॉलिड ऑक्साइड इलेक्ट्रोलाइजर का उपयोग करके हाइड्रोजन का उत्पादन किया जाएगा। धूप रहने के दौरान घंटों तक उत्पादित हाइड्रोजन को उच्च दबाव में संग्रहीत किया जाएगा और फिर 50 किलोवॉट ठोस ऑक्साइड ईंधन सेल का उपयोग करके इसे विद्युतीकृत किया जाएगा। यह प्रणाली शाम 5 बजे से सुबह 7 बजे तक एकल आधार पर कार्य करेगी। इस अनूठी परियोजना की रूपरेखा एनटीपीसी ने तैयार की है। यह भारत के लिए एक विशिष्ट परियोजना है और लद्दाख तथा जम्मू-कश्मीर जैसे देश के दूरदराज क्षेत्रों को कार्बन उत्सर्जन से मुक्त करने में मददगार होगी। ये क्षेत्र अब तक केवल डीजल जनरेटर पर निर्भर हैं।

इंदौर में कपड़ा कारोबारियों ने थाली बजाकर किया GST बढ़ोतरी का विरोध, कहा- छोटे व्यापारी हो जाएंगे खत्म

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

इन्दौर में कपड़ा व्यापारी एसोसिएशन का जीएसटी बढ़ोतरी के खिलाफ विरोध लगातार कई दिनों से जारी है। बुधवार सुबह प्रदर्शनकारियों ने अनोखे रूप में थाली बजाकर कपड़े पर 5 फीसद से 12 फीसद जीएसटी टैक्स करने का विरोध किया। उन्होंने पूर्व सांसद सुमित्रा महाजन को ज्ञापन सौंपा और बढ़ाए गए जीएसटी को वापस लिए जाने की मांग रखी। दरअसल इन्दौर में कपड़ा कारोबारी जीएसटी में बढ़ोतरी के खिलाफ पिछले कई दिनों से लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी कड़ी में सुबह कपड़ा व्यापारी एसोसिएशन ने जीएसटी कम करने की मांग को लेकर पूर्व सांसद सुमित्रा महाजन के सामने जीएसटी को कम करने की मांग रखी है।

GST बढ़ोतरी के खिलाफ थाली बजाकर प्रदर्शन

एसोसिएशन के अध्यक्ष हंसराज जैन का कहना है कि 2017 में 5 फीसद जीएसटी बढ़ाया गया था। उस समय हमें लगा था कि देश के विकास में कपड़ा व्यापारियों का भी योगदान होना चाहिए। इस कारण से हमने सहन कर लिया लेकिन अब फिर जीएसटी बढ़ाकर 12% कर दिया गया है। बढ़ोतरी ने अब व्यापार को समाप्त करने की ओर अग्रसर कर दिया गया है। इसके कारण छोटे व्यापारी पर बढ़े हुए जीएसटी का काफी असर हो रहा है। उन्होंने बताया कि छोटे व्यापारी अपना रोजगार समाप्त कर रहे हैं। इस वजह से आज रेडीमेड एसोसिएशन को भी हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर अनोखे अंदाज में थाली बजाकर प्रदर्शन किया।

News यू केन USE

बजट पूर्व चर्चा शुरू करेंगी वित्तमंत्री

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण बुधवार से हितधारकों के साथ 2022-23 के आम बजट को लेकर विचार-विमर्श शुरू करेंगी। पहली बैठक कृषि एवं कृषि प्रसंस्करण उद्योग के विशेषज्ञों के साथ होगी। वित्त मंत्रालय ने ट्वीट कर बताया कि वित्तमंत्री आगामी बजट को लेकर 15 दिसंबर, 2021 से नई दिल्ली में विभिन्न हितधारकों के समूहों के साथ डिजिटल तरीके से बजट-पूर्व चर्चा शुरू करेंगी। आम बजट एक फरवरी, 2022 को पेश होने की उम्मीद है। इसमें सरकार का जोर मांग बढ़ाने, नौकरियों के सृजन और अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को 8 फीसदी पर ले जाने पर रहेगा। ट्वीट में कहा गया है कि सीतारमण महामारी से प्रभावित उपभोग को फिर बढ़ाने और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के उपायों पर उद्योग संघों, किसान संगठनों और अर्थशास्त्रियों समेत विभिन्न हितधारकों से विचार-विमर्श करेंगी। 2021-22 में आर्थिक वृद्धि दर 10 फीसदी से अधिक रहने की उम्मीद है।

इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों और आभूषण क्षेत्र के प्रदर्शन से नवंबर में 30 अरब डॉलर का निर्यात, 23 अरब डॉलर का व्यापार घाटा

नई दिल्ली। एजेंसी

इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों और रत्न एवं आभूषण क्षेत्र के दमदार प्रदर्शन से नवंबर में 30.04 अरब डॉलर का निर्यात हुआ। सरकार ने मंगलवार को बताया कि पिछले महीने निर्यात 27.16 फीसदी बढ़ा है। आंकड़ों के मुताबिक, पिछले साल नवंबर में 23.62 अरब डॉलर का निर्यात हुआ था। इस साल निर्यात के साथ आयात में भी तेजी आई और नवंबर में कुल 52.94 अरब डॉलर का आयात हुआ। यह पिछले साल से 56.58 फीसदी ज्यादा है। तब कुल आयात 33.81 अरब डॉलर रहा था। निर्यात के मुकाबले आयात में तेजी से व्यापार घाटा बढ़कर 22.91 अरब डॉलर पहुंच गया। पिछले साल यह आंकड़ा 10.19 अरब डॉलर था। सरकार ने बताया कि नवंबर में उत्पाद और सेवा का कुल निर्यात 50.36 अरब डॉलर रहा, जो 2020 के मुकाबले 22.80 फीसदी ज्यादा है।

लगातार तीसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ बाजार, सेंसेक्स 329 अंक फिसला, निफ्टी भी टूटा

मुंबई। आईपीटी नेटवर्क

बुधवार को शेयर बाजार सुस्ती के साथ शुरू हुआ और दिन भर के कारोबार के बाद लगातार तीसरे दिन लाल निशान पर बंद हुआ। कारोबार के अंत में बीएसई का सेंसेक्स 329 अंक टूटकर 58 हजार के स्तर के नीचे आकर 57,788 के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एनएसई के निफ्टी सूचकांक में भी गिरावट देखने को मिली। निफ्टी 103 अंक फिसलकर 17,221 के स्तर पर बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे कारोबारी दिन बुधवार को शेयर बाजार की सपाट शुरुआत हुई थी। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स जहां हरे निशान पर खुला था, जबकि एनएसई के निफ्टी ने लाल निशान पर कारोबार की शुरुआत की थी। सेंसेक्स 4.91 अंक या 0.01 फीसदी की बढ़त के साथ 58,122 के स्तर पर और निफ्टी सूचकांक 1.25 अंक या 0.01 फीसदी टूटकर 17,323.65 के स्तर पर खुला था।

विश्व बैंक ने जताई कोरोना के दौरान स्कूल बंद रहने से 17 लाख करोड़ डॉलर के नुकसान की आशंका

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

कोरोना महामारी से हुए नुकसान के कारण छात्रों की वर्तमान पीढ़ी पर उनके जीवन की कमाई के 17 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के नुकसान का खतरा है। यह पूरी दुनिया के वर्तमान जीडीपी का लगभग 14 प्रतिशत है। विश्व बैंक और यूनेस्को ने इससे जुड़ी एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट में कोरोना महामारी के दौरान स्कूलों के बंद होने से नुकसान का अंदाजा लगाया गया है। इस रिपोर्ट को ''स्टेट ऑफ द ग्लोबल एजुकेशन क्राइसिस : अ पाथ टू रिकवरी रिपोर्ट'' नाम दिया गया है। इसमें बताया गया है कि स्कूलों पर कोरोना का प्रभाव अनुमान से ज्यादा पड़ा है। यह 10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के पूर्वानुमान से कहीं अधिक है। इसमें बताया गया है कि मध्यम और कम आय वाले देशों में पहले से 53 फीसदी बच्चे शिक्षण की समस्या से जूझ रहे थे। अब कोरोना महामारी के कारण स्कूलों के बंद होने के बाद यह बढ़कर 70 फीसदी तक पहुंच सकती है।

स्कूलों के बंद होने ने दुनियाभर में शिक्षा की रफ्तार को रोका

विश्व बैंक के वैश्विक शिक्षा निदेशक जैमी सावेद्रा ने कहा कि कोरोना महामारी के कारण हुई स्कूलों के बंद होने की घटना ने दुनियाभर में शिक्षा की रफ्तार

को रोक दिया है। महामारी आने के 21 महीने बाद भी कई स्कूल बंद हैं। लाखों छात्र स्कूलों से दूर हैं और कई तो अब कभी स्कूलों में जा ही नहीं पाएंगे। बच्चों का यह नुकसान मंजूर नहीं किया जा सकता। इससे उनके भविष्य में नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेंगे। इस पीढ़ी की उत्पादकता, कमाई, रहन-सहन सभी बातों पर इस महामारी का बुरा असर होगा। यह उनके परिवार और पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था के लिए बुरा होगा।

पैकेज में शिक्षा के लिए तीन फीसदी से भी कम हिस्सा

रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनियाभर के देशों में सरकारों द्वारा कोरोना के दौरान घोषित किए गए राहत पैकेज में तीन फीसदी से भी कम हिस्सा शिक्षा के लिए रखा गया है, जबकि वर्तमान समय में इससे कहीं अधिक की आवश्यकता है। इस स्थिति से निपटने के लिए छात्रों को उनके स्तर के हिसाब से व्यवस्थाएं करने की जरूरत है। इसके साथ ही शिक्षकों को भी इस स्थिति से निपटने के लिए उचित व्यवस्था देने की आवश्यकता है।

एसबीआई ने सर्विस चार्ज के जरिए ग्राहकों से कमाए 346 करोड़ रुपये

वित्त मंत्रालय ने दी ये अहम जानकारी

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने अपने खाताधारक ग्राहकों से सर्विस फीस के तौर पर 346 करोड़ रुपये की कमाई की है। वित्त मंत्रालय की ओर से संसद में यह जानकारी दी गई है। मंत्रालय ने बताया कि एसबीआई ने जन धन खातों सहित बेसिक सेविंग अकाउंट रखने वाले ग्राहकों के लिए अतिरिक्त सेवाओं के रूप में 2017-18 से अक्तूबर 2021 तक लगभग 346 करोड़ रुपये इकट्ठा किए। वित्त राज्य मंत्री भागवत कराड ने एक सवाल के लिखित उत्तर में कहा कि एसबीआई द्वारा इस संबंध में सूचित किया गया है। भारतीय स्टेट बैंक ने 2017-18 से अक्तूबर 2021 तक की अवधि के दौरान न्यूनतम अनुमानित फ्री सर्विस के बाद ग्राहकों द्वारा मांगी अतिरिक्त सेवा देने के पर 345.84 करोड़ रुपये शुल्क जमा किया है। भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार प्रधान मंत्री जन धन योजना के तहत खोले गए खातों सहित बेसिक सेविंग बैंक जमा खाता बुनियादी न्यूनतम सुविधाएं निः शुल्क और न्यूनतम शेष राशि बनाए रखने की आवश्यकता के बिना दिया जाता है। आरबीआई ने बैंक को सलाह दी है कि वे गैर-भेदभावपूर्ण तरीके से उचित और पारदर्शी आधार पर निर्धारित बुनियादी न्यूनतम सेवाओं से परे अतिरिक्त सेवाओं पर चार्ज लगाने के लिए स्वतंत्र है।

शुरुआती कारोबार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 21 पैसे फिसलकर 76 से नीचे

मुंबई। कोरोना वायरस के नये स्वरूप ओमीक्रोन से घरेलू स्तर पर चिंताओं तथा मजबूत विदेशी फंड बहिर्वाह से बुधवार को शुरुआती सौदे में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 22 पैसे फिसलकर 76 से नीचे पहुंच गया। विदेशी मुद्रा व्यापारियों के अनुसार, घरेलू शेयर बाजार में सुस्त रुख तथा मजबूत अमेरिकी मुद्रा का घरेलू स्तर पर भी असर पड़ा जिससे रुपये में गिरावट देखी गई। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय में डॉलर के मुकाबले रुपया खराब शुरुआत के साथ 76.05 पर खुला। यह बाद में 76.10 के निचले स्तर पर पंहुचा गया जो पिछले बंद के मुकाबले 22 पैसे की गिरावट दर्शाता है। इससे पिछले कारोबारी सत्र में रुपया 10 पैसे की गिरावट लेकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 18 महीने के निचले स्तर 75.88 पर बंद हुआ था। व्यापारियों का कहना है कि रुपये में गिरावट का कारण कोरोना वायरस के नए स्वरुप ओमीक्रोन के तेजी से फैलने की आशंका भी है। देश में इस स्वरुप के अब तक 61 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। इस बीच, छह प्रमुख मुद्राओं की तुलना में डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की गिरावट लेकर 96.51 पर पहुंच गया।

दुनिया की पहली 100 फीसदी पेपरलेस सरकार बनी दुबई

सेवाएं डिजिटल होने के बाद 350 मिलियन अमेरिकी डॉलर की बचत का दावा

तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल के बाद दुनिया भर में कागजों का इस्तेमाल कम हुआ है। दुबई 100 फीसदी पेपरलेस होने वाली दुनिया की पहली सरकार बन गई है। अमीरात के क्राउन प्रिंस शेख हमदान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम ने दावा किया है कि दुबई की सरकार पूरी तरह से डिजिटल हो गई है। दुबई सरकार में सभी आंतरिक, बाहरी लेनदेन और प्रक्रियाएं अब 100 फीसदी डिजिटल हैं। दुबई सरकार में सभी सेवाएं एक व्यापक डिजिटल सरकारी सेवा मंच से प्रबंधित की जा रही हैं।

दुबई दुनिया की पहली पेपरलेस सरकार

अमीरात के क्राउन प्रिंस शेख हमदान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम ने घोषणा करते हुए कहा कि दुबई सरकार में सभी तरह की प्रक्रियाएं अब 100 प्रतिशत डिजिटल हैं। दुबई सरकार पूरी तरह से डिजिटल होने के बाद 350 मिलियन अमेरिकी डॉलर की बचत होने का दावा किया जा रहा है। वहीं इससे 14 मिलयन मानव श्रम घंटों की भी बचत होगी। शेख हमदान ने शनिवार को एक बयान में कहा कि इस लक्ष्य की उपलब्धि दुबई के जीवन को उसके सभी पहलुओं में डिजिटल बनाने की यात्रा में एक नए चरण की शुरुआत का प्रतीक है। इससे नवाचार और रचनात्मकता को और बढ़ावा मिलेगा।

दुबई पेपरलेस स्ट्रैटेजी

दुबई को पेपरलेस बनाने की रणनीति को पांच चरणों में लागू किया गया, जिनमें से प्रत्येक ने दुबई सरकार की संस्थाओं के एक अलग समूह को सूचीबद्ध किया था। बताया जा रहा है कि पांचवें चरण के अंत तक अमीरात में सभी 45 सरकारी संस्थाओं में ये रणनीति पूरी तरह से लागू हो गई थी। ये संस्थाएं 1,800 से अधिक डिजिटल सेवाएं और 10,500 से अधिक प्रमुख लेनदेन का काम करती हैं। सेवाओं के डिजिटल होने से कागज की खपत में 336 मिलियन से अधिक की कटौती हुई है। वहीं आर्थिक बचत के साथ साथ मानव श्रम के घंटों में भी बचत हुई है।

एथनॉल बिक्री से चालू सीजन में 18,000 करोड़ रुपये से ज्यादा कमा सकते हैं चीनी, शराब कारखाने: सरकार

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

तेल विपणन कंपनियों ओएमसी को पेट्रोल में मिलाने के लिए एथनॉल बेचकर चीनी मिलें और शराब कारखाने 2021-22 के सीजन में 18,000 करोड़ रुपये से अधिक राजस्व अर्जित कर सकते हैं। खाद्य और उपभोक्ता मामलों की राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एथनॉल आपूर्ति के पिछले तीन वर्षों 2018-19, 2019-20 और 2020-21 के दौरान ओएमसी को एथनॉल की बिक्री से चीनी मिलों/शराब कारखानों ने क्रमशः करीब 8,079 करोड़ रुपये, 7,823 करोड़ रुपये और 13,598 करोड़ रुपये अर्जित किये हैं। ज्योति ने कहा कि इससे चीनी मिलों को किसानों के गन्ना का समय पर भुगतान करने में मदद मिली है। उन्होंने कहा, ''2021-22 के मौजूदा सीजन में 18,000 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व अर्जित होने की संभावना है।''

ग्लोबल वार्मिंग रोके बिना भीषण गर्मी से 1.6 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर का होगा नुकसान : अध्ययन

एजेंसी

ग्लोबल वार्मिंग की हर अतिरिक्त डिग्री घातीय तेज़ी से नुकसानों का कारण बनेगी। जैसे-जैसे दुनिया गर्म होती है गर्म स्थिति में काम करने के प्रति एडाप्टेशन कम प्रभावी हो जाएगा। ये एक पेपर के प्रमुख निष्कर्ष हैं जो नेचर कम्युनिकेशंस जर्नल में आज प्रकाशित हुआ है। पेपर के अनुसार गर्म और आर्द्र परिस्थितियों में काम करना स्वास्थ्य और कल्याण के जोखिम पैदा करता है जो कि ग्रह के गर्म होने पर बढ़ जाएँगे। यह प्रस्तावित किया गया है कि श्रम को दोपहर से ठंडे घंटों में डालकर बढ़ते तापमान के प्रति श्रमिक एडाप्ट हो सकते हैं। वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के प्रति एडाप्ट होने के रूप में दिन के ठंडे हिस्सों में भारी काम को स्थानांतरित करने की प्रभावशीलता का आंकलन करने वाला यह पहला अध्ययन है।

उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में, 12-घंटे का अधिकांश काम का दिन पहले से ही इतना गर्म और आर्द्र होता है कि दिन की बड़ी मात्रा लगातार भारी श्रम के लिए असुरक्षित हो जाती है, इसलिए हम यह भी जांचते हैं कि अगर श्रमिक भारी श्रम को दिन के सबसे गर्म घंटे से सबसे ठंडे घंटे या सुबह के शुरुआती घंटे में ले जा सकते हैं तो कितना समय वसूल किया जा सकता है। यह विश्लेषणात्मक विकल्प हाल के एक अध्ययन से प्रेरित है जिसमें पाया गया कि इंडोनेशियाई श्रमिक पहले से ही दिन की चरम गर्मी में काम से बच रहे हैं, साथ ही एक अन्य अध्ययन जो कृषि श्रमिकों को उत्पादकता बढ़ाने के लिए बहुत सवेरे के 1-2 घंटे में काम स्थानांतरण की सलाह देता है।

नोट : वेट बल्ब हीट यानी गर्मी और आर्द्रता का मिला जुला ऐसा स्वरुप जिसे इन्सान सहन न कर सके और जो जान लेवा हो सकता है :गर्मियों में इंसानी शरीर पसीने के जरिए खुद को ठंडा करता है लेकिन अगर उमस का स्तर बहुत ज्यादा हो जाए तो पसीना काम नहीं करता और खतरनाक ओवरहीटिंग का जोखिम पैदा हो जाता है। वेट बल्ब टेंपरेचर गर्मी और उमस को नापने का एक पैमाना है और इस प्रकार से यह इस बात का अनुमान लगाने में उपयोगी है कि मौसमी परिस्थितियां इंसानों के लिए सुरक्षित हैं या नहीं। यह उस न्यूनतम तापमान का प्रतिनिधित्व करता है जो आप पानी से वाष्पीकरण जैसे कि पसीना निकलना के जरिए कम कर सकते हैं। गर्मी और नमी को मापने के अन्य रास्तों में वेट बल्ब ग्लोब टेंपरेचर और हीट इंडेक्स भी शामिल है वेट बल्ब ग्लोब टेंपरेचर अक्सर बाहर कसरत करने वाले लोगों जैसे कि सैनिक या एथलीटों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वेट बल्ब टेंपरेचर के जरिए तपिश और उमस को मापा जाता है। यहां तक कि पूरी तरह से स्वस्थ तथा गर्मी में रहने के अभ्यस्त लोग भी 32 डिग्री सेल्सियस वेट बल्ब तापमान टीडब्ल्यू पर काम करने लायक नहीं रहते और अगर ऐसे लोग 35 डिग्री सेल्सियस टीडब्ल्यू पर छांव में बैठें तो भी 6 घंटे के अंदर उनकी मौत हो जाएगी। जलवायु परिवर्तन इन वेट बल्ब टेंपरेचर के खतरे को लगातार बढ़ा रहा है।

गर्मी और आर्द्रता का मिला जुला ऐसा स्वरुप जिसे इंसान सह सके उस के लिए शारीरिक सीमाएं हैं । हम पहले से ही गर्म और आर्द्र परिस्थितियों के कारण श्रम उत्पादकता और पैसा खो रहे हैं। यहां तक कि जब श्रम उत्पादकता को बनाए रखा जाता है, तब भी गर्मी और आर्द्रता श्रमिकों के लिए गंभीर और दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकती हैं। कुछ कर्मचारी पहले से ही भारी काम को सबसे गर्म घंटों से ठंडे घंटों में डाल रहे हैं। यह वर्तमान में उत्पादकता हानि के लगभग 30इ की भरपाई कर सकता है। हालांकि, यह अन्य मुद्दों का कारण बन सकता है, उदाहरण के लिए बढ़ते गर्म, आर्द्र मौसम के दौरान खराब नींद के कारण।

अधिक ग्लोबल वार्मिंग के कारण और बहुत श्रम हानि होगी, सबसे अधिक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में, लेकिन मध्य-अक्षांशों भी तेज़ी से प्रभावित होंगे। वार्मिंग की प्रत्येक डिग्री श्रम उत्पादकता में रैखिक नहीं बल्कि घातीय नुकसान की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए, अतिरिक्त 2ष्टण ग्लोबल वार्मिंग के साथ, 12-घंटे के काम के दिन में खोए गए घंटों की संख्या पिछले 42 वर्षों में ।101 बिलियन घंटे प्रति ष्टण से बढ़कर 197 बिलियन घंटे प्रति ष्टण ३/-11 बिलियन घंटे हो जाती है।

वर्तमान माहौल में, विश्व स्तर पर काम के दिन में भारी श्रम नुकसान का लगभग 30इ दिन के सबसे गर्म घंटों से श्रम ख़िसका कर पुनर्प्राप्त किया जा सकता है।

लेकिन हम दिखाते हैं कि यह विशेष वर्कशिफ्ट काम का शिफ्ट एडाप्टेशन क्षमता ग्लोबल वार्मिंग के लगभग 2इ प्रति डिग्री की दर से खो जाती है क्योंकि सुबह की गर्मी लगातार काम के लिए असुरक्षित स्तर तक बढ़ जाती है, उच्च वार्मिंग स्तरों के तहत श्रमिक उत्पादकता हानि में तेज़ी आती है। ये निष्कर्ष श्रमिकों को सुरक्षित रखने के लिए वैकल्पिक एडाप्टेशन तंत्र खोजने के महत्व के साथ-साथ ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। हर साल सैकड़ों मिलियन लोग पहले से ही असुरक्षित स्तर की गर्मी और संभावित उच्च आर्द्रता के संपर्क में हैं। आर्द्र गर्मी विशेष रूप से खतरनाक होती है क्योंकि उच्च आर्द्रता के साथ उच्च परिवेश तापमान पसीने से बाष्पीकरणीय शीतलन द्वारा शरीर की गर्मी को बाहरी वातावरण में खोने की क्षमता को बाधित करता है।

उच्च आर्द्रता और तापमान में, बाहर काम करने वाले श्रमिकों को काम धीमा करना चाहिए, हाइड्रेट करना चाहिए, और छाया में ब्रेक लेना चाहिए ताकि शरीर को ठंडा होने का मौका दिया जा सके और शरीर के आंतरिक तापमान स्तर को सुरक्षित बनाए रखा जा सके या यदि वे उच्च परिश्रम पर काम करना जारी रखते हैं तो चोट, बीमारी या मृत्यु का जोखिम होता है। कई निम्न-अक्षांश स्थान पहले से ही गर्मी के जोखिम का अनुभव करते हैं जो शारीरिक श्रम को असुरक्षित बनाता है। गर्मी के जोखिम के कारण काम की दर में कमी से जुड़े श्रम उत्पादकता नुकसान । 280-311 बिलियन ऋळए प्रति वर्ष 11,12 तक हो सकते हैं, जिनमें से अधिकांश निम्न और मध्यम आय वाले देशों में भारी शारीरिक श्रम में नुकसान के कारण हैं, जैसे कृषि और निर्माण।

आने वाली सदी में, ग्रह की मानव-चालित वार्मिंग कई निम्न-अक्षांश क्षेत्रों को बाहरी श्रम (बाहर करने वाले काम) के लिए असुविधाजनक और असुरक्षित परिस्थितियों में और भी आगे बढ़ाएगी, जिसमें वैश्विक तापमान के एक कार्य के रूप में गर्मी का जोखिम अपेक्षाकृत रैखिक रूप से बढ़ रहा है।

काम को ठंडे घंटों में ले जाकर जलवायु परिवर्तन के प्रति एडाप्ट होने की संभावना प्रत्येक अतिरिक्त डिग्री वार्मिंग के साथ लगभग 2इ कम हो जाती है। भविष्य के गर्म होने के अतिरिक्त 2 डिग्री सेल्सियस पूर्व-औद्योगिक स्तरों से कुल लगभग 3 डिग्री सेल्सियस ऊपर के तहत, वर्तमान में दिन के सबसे गर्म 12 घंटों में जो खोया जाता है दिन के सबसे ठंडे 12 घंटों में उससे अधिक वैश्विक श्रम खो जाएगा। सभी निष्कर्ष रूढ़िवादी हैं, क्योंकि वे छाया में स्थितियों को दर्शाते हैं। बुनियादी एडाप्टेशन उपाय बाहरी श्रमिकों के लिए भविष्य में बढ़ती गर्मी के प्रभावों को कम करने में मदद कर सकते हैं। इन उपायों में पर्याप्त जलयोजन, छाया में आराम करना, गर्मी के आदी होना, व्यक्तिगत शीतलन रणनीतियाँ और काम के घंटों को दिन के ठंडे हिस्सों में ले जाना सुनिश्चित करना शामिल है। उन स्थानों पर जहां श्रमिकों को गर्मी से बचाने के लिए बनाए गए नियम लागू नहीं हैं, श्रमिक पहले से ही गर्मी के जोखिम को सीमित करने के लिए शेड्यूल बदल रहे हैं। काम के घंटों में बदलाव को कामगारों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए निहितार्थ, काम के समय को बदलने से प्रतिस्पर्धा खतरों और उद्योग-विशिष्ट पहलुओं पर विचार करना चाहिए। संभावित गर्मी जोखिम और स्वास्थ्य लागत और काम के समय को स्थानांतरित करने के लाभों की व्यापक समझ की आवश्यकता है ताकि ट्रेड-ऑफ को तौला जा सके और निर्णय लेने और नीतियों को सूचित किया जा सके जो गर्मी के प्रति एडाप्टेशन का समर्थन करते हैं। पेपर श्रम उत्पादकता पर वर्तमान और भविष्य के तापमान के प्रभाव, और काम को दिन के ठंडे घंटों में स्थानांतरित करके इसे कितना 'एडाप्ट' किया जा सकता है, की पड़ताल करता है। वे पिछले 40 वर्षों लगभग 1 डिग्री सेल्सियस की आधार रेखा पर ङअतिरिक्तङ वार्मिंग दिखाते हैं – इसलिए अतिरिक्त 2 डिग्री सेल्सियस वार्मिंग पूर्व -औद्योगिक स्तरों से कुल लगभग 3 डिग्री सेल्सियस ज़्यादा का प्रतिनिधित्व करती है।

भारत : वर्तमान समय की जलवायु में, नई दिल्ली, भारत या दोहा, कतर जैसे स्थान पर एक आम गर्मी का दिन छाया में श्रमिकों को दोपहर की गर्मी के संपर्क में लाता है, जिससे सुरक्षित काम के समय में उत्पादकता का नुकसान 15-20 मिनट/घंटा होता है। इसके विपरीत, 10 मिनट/घंटा उत्पादकता के नुकसान के साथ, लगातार भारी शारीरिक श्रम के लिए 'सुरक्षित' कार्य सीमा तक पहुंचने के लिए सुबह के समय अभी भी पर्याप्त ठंडे होते हैं।

जब हम भारी बाहरी श्रम तरीकों में कामकाजी उम्र की आबादी पर प्रति व्यक्ति श्रम नुकसान को ओवरले करते हैं, तो हम पाते हैं कि दक्षिण और पूर्वी एशिया में बड़ी आबादी वाले देशों में सबसे अधिक काम के घंटों का नुकसान होता है, सबसे ठंडे घंटों में दिखाया नहीं गया और पूरे काम के दिन , दोनों में, जिसमें औसत प्रति व्यक्ति श्रम हानि 162 घंटे/व्यक्ति/वर्ष खो गई के बावजूद भारत में भारी श्रम 101 अरब घंटे खो/वर्ष पर सबसे बड़ा गर्मी जोखिम प्रभाव दिख रहा है।

दक्षिण पूर्व एशिया और उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में छोटी आबादी वाले देश अन्य देशों की तुलना में कम राष्ट्रीय-औसत प्रति व्यक्ति नुकसान होने के बावजूद भविष्य में गर्माहट के तहत, भारत, चीन, पाकिस्तान और इंडोनेशिया सबसे बड़ी जनसंख्या-भारित श्रम हानि और संबंधित आर्थिक उत्पादकता प्रभाव का अनुभव करते हैं।

बांग्लादेश, चीन, इंडोनेशिया : मध्य अमेरिका, श्रीलंका, भारत और मिस्र और अन्य क्षेत्रों में अन्यथा स्वस्थ, अपेक्षाकृत युवा श्रमिकों में अज्ञात एटियलजि के क्रोनिक किडनी रोग की महामारी के लिए संभावित योगदान कारक के रूप में हीट एक्सपोजर भी शामिल है। पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन जैसे अन्य देशों में बड़े जनसंख्या-भारित श्रम नुकसान 10 अरब घंटे/वर्ष बड़ी कामकाजी उम्र की आबादी, मौसमी गर्मी के जोखिम और कृषि और निर्माण उद्योग में आबादी के बड़े हिस्से के संयोजन से प्रेरित होते हैं। दक्षिण पूर्व एशिया और उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में छोटी आबादी वाले अन्य देशों की तुलना में कम राष्ट्रीय-औसत प्रति व्यक्ति नुकसान होने के बावजूद, भविष्य में वार्मिंग के तहत, भारत, चीन, पाकिस्तान और इंडोनेशिया सबसे बड़ी जनसंख्या-भारित श्रम हानि और संबंधित आर्थिक उत्पादकता प्रभाव का अनुभव करते हैं। बांग्लादेश एक उल्लेखनीय अपवाद है क्योंकि यह वर्तमान में और गर्मी के साथ प्रति व्यक्ति के साथ-साथ जनसंख्या-भारित श्रम हानियों को बड़े पैमाने पर दर्शाता है।

इस दिन अवश्य करें सूर्यदेव की आराधना, चमक उठेगा भाग्य

सूर्यदेव का धनु राशि में आगमन धनु संक्रांति कहलाता है। इस दिन को बहुत पवित्र माना जाता है। धनु संक्रांति पर सूर्यदेव के दिवाकर स्वरूप की पूजा की जाती है। इस दिन सूर्यदेव के साथ भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है। इस दिन गायत्री मंत्र का जाप करना विशेष रूप से पुण्यकारी माना जाता है। इस दिन सूर्यदेव की आराधना से तेज में वृद्धि होती है। भाग्योदय होता है। सूर्यदेव की उपासना से यश-कीर्ति, पद-प्रतिष्ठा, पदोन्नति की प्राप्ति होती है। धनु संक्रांति के दिन भगवान सत्यनारायण की कथा का पाठ करें। संक्रांति के दिन पितृ तर्पण, दान, धर्म और स्नान आदि का विशेष महत्व है। इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। धनु संक्रांति के दिन भगवान जगन्नाथ की पूजा की जाती है। इस दिन भगवान जगन्नाथ को मीठाभात अर्पित किया जाता है। धनु संक्रांति के साथ ही खरमास का आरंभ हो जाता है। खरमास में विवाह, मांगलिक एवं शुभ कर्मों को वर्जित किया गया है। किसी भी तीर्थ स्थल की यात्रा करने के लिए खरमास सबसे उत्तम मास माना गया है। इस दिन भगवान सूर्यदेव की उपासना से बुद्धि और विवेक की प्राप्ति होती है। धनु संक्रांति पर गोदान के साथ जरूरतमंदों को वस्त्र और अन्नदान करें। पीपल और तुलसी को जल अर्पित करें। इस दिन गाय को चारा या अन्न खिलाएं। इस दिन नमक का सेवन न करें।

भूलकर भी इन रत्नों को एक साथ न पहने, कम होने की जगह बढ़ जाएंगी परेशानियां

संतोष वाधवानी
रत्न विशेषज्ञ
अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष एवं वास्तु एसोसिएशन प्रदेश प्रवक्ता

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार रत्न धारण करने से ग्रहों का अशुभ प्रभाव कम होता है। हर ग्रह के अलग रत्न होते हैं। जातक की कुंडली पर विचार कर रत्न धारण किए जाते हैं। कुछ रत्न ऐसे भी होते हैं, जिन्हें एक साथ नहीं पहनना चाहिए। इन रत्नों को एक साथ पहनने से परेशानियां कम होने की जगह बढ़ सकती हैं। अगर कुछ रत्नों को साथ में पहन लिया तो व्यक्ति को जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आइए जानते हैं किन रत्नों को साथ नहीं पहनना चाहिए।

मोती के साथ हीरा, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया और नीलम न पहने

अगर किसी व्यक्ति ने मोती पहन रखा है तो उस व्यक्ति को हीरा, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया और नीलम धारण नहीं करना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मोती धारण किया जाता है। मोती के साथ हीरा, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया और नीलम पहनने से मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है।

पन्ना के साथ पुखराज, मूंगा और मोती न पहने

अगर किसी व्यक्ति ने पन्ना धारण कर रखा है तो उस व्यक्ति को पुखराज, मूंगा और मोती नहीं पहनना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार पन्ना बुध ग्रह का रत्न होता है। इसे पहनने से बुध का अशुभ प्रभाव कम होता है। पन्ना के साथ पुखराज, मूंगा और मोती धारण करने से धन- हानि हो सकती है।

लहसुनिया के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज और मोती न पहने

अगर किसी व्यक्ति ने लहसुनिया धारण कर रखा है तो उस व्यक्ति को माणिक्य, मूंगा, पुखराज और मोती नहीं पहनना चाहिए। लहसुनिया के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज और मोती धारण करने से जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

नीलम के साथ माणिक्य, मूंगा, मोती और पुखराज न पहने

नीलम शनि ग्रह का रत्न है। अगर किसी व्यक्ति ने नीलम धारण कर रखा है तो उसे माणिक्य, मूंगा, मोती और पुखराज नहीं पहनना चाहिए। ऐसा करने से विपरित प्रभाव पड़ सकता है।

16 दिसंबर को धनु संक्रांति पर गुरु प्रदोष का संयोग

इस दिन सूर्यास्त के बाद होगी विशेष शिव पूजा

इस बार धनु संक्रांति पर गुरुवार को महीने का दूसरा प्रदोष व्रत है। शिव और स्कंद पुराण के मुताबिक अगहन महीने की तेरहवीं तिथि यानी त्रयोदशी पर भगवान शिव की विशेष पूजा से हर तरह की परेशानी दूर हो जाती है। ये पूजा प्रदोष काल यानी सूर्यास्त से तकरीबन 90 मिनिट तक के बीच की जाती है। गुरुवार के दिन त्रयोदशी होने से इस दिन गुरु प्रदोष का योग बन रहा है। साथ ही इस दिन धनु संक्रांति पर्व भी है। इस संयोग में शिव पूजा से दुश्मनों पर जीत होती है और पितरों को तृप्ति मिलती है।

साल के आखिरी दिन भी प्रदोष व्रत

31 दिसंबर को प्रदोष व्रत रहेगा। इस दिन शुक्र प्रदोष का संयोग बन रहा है। इस महीने 2 दिसंबर फिर 16 तारीख को प्रदोष व्रत है। इस तरह साल के आखिरी महीने में 3 बार प्रदोष व्रत किया जाएगा। शिव पूजा के साथ ही इस साल की समाप्ति होना भी अपने आप में शुभ संयोग है।

सूर्यास्त के बाद प्रदोष काल में पूजा

पुराणों और ज्योतिष ग्रंथों के मुताबिक

प्रदोष व्रत में सूर्यास्त के बाद तकरीबन 90 मिनिट के समय को प्रदोष काल कहा जाता है। इस दौरान भगवान शिव-पार्वती की विशेष पूजा की परंपरा है। प्रदोष काल में की गई पूजा से शारीरिक, मानसिक और आर्थिक परेशानियां भी दूर हो जाती हैं। इस बार गुरुवार का शुभ संयोग बनने पर शिव पूजा का कई गुना शुभ फल मिलेगा।

पूजा विधिः पंचामृत से रूद्राभिषेक

सूर्यास्त होने के पहले नहा लें। इसके बाद पूजा की तैयारी करें। प्रदोष काल शुरू होने पर भगवान शिव का अभिषेक करें। इसके लिए पंचामृत का इस्तेमाल भी करना चाहिए। फिर चंदन, अक्षत, अबीर-गुलाल, बिल्वपत्र, धतूरा, मदार के फूल और अन्य पूजा सामग्री चढ़ाएं। इसके बाद भगवान शिव की धूप व दीपक से आरती करें। महादेव को भोग लगाएं।

व्रत विधिः शाम को शिव पूजा के बाद भोजन

इस दिन सूर्योदय से पहले नहा लें। फिर शिव मंदिर या घर पर ही पूजा स्थान पर बैठकर हाथ में जल लें और प्रदोष व्रत के साथ शिव पूजा का संकल्प लें। इसके बाद शिवजी की पूजा करें। फिर पीपल में जल चढ़ाएं। दिनभर प्रदोष व्रत के नियमों का पालन करें। यानी शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह सात्विक रहें। भोजन न करें। फलाहार कर सकते हैं। फिर शाम को महादेव की पूजा और आरती के बाद प्रदोष काल खत्म होने पर यानी सूर्यास्त से 72 मिनिट बाद भोजन कर सकते हैं।

यहां टकराए यह रेखा तो ठप हो जाता है काम-धंधा

हस्तरेखा विज्ञान में राहु रेखाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। जो रेखाएं राहु के क्षेत्र से गुजरती हों और आड़ी भी हों वे राहु रेखाएं होती हैं। राहु रेखाएं व्यक्ति के जीवन में समस्याएं पैदा करती हैं। इसी कारण से राहु रेखाएं परेशानी की रेखा भी कही जाती हैं। यदि राहु रेखाएं जीवन रेखा को नहीं छू रही हैं तो ये परेशानी की रेखाएं होती हैं। इससे पता चलता है कि व्यक्ति मानसिक रूप परेशान है। ये रेखाएं व्यक्ति की चिंता को दर्शाती हैं, लेकिन यदि ये रेखाएं लंबी होकर राहु क्षेत्र से गुजरती हैं तो ये रेखाएं पूरी तरह से राहु की रेखाएं कहलाती हैं। इन रेखाओं का असर केवल मानसिक स्तर पर नहीं होता बल्कि व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करती हैं। राहु रेखाएं हल्की, मध्यम और बहुत मोटी हो सकती हैं। यदि राहु की रेखाएं बहुत हल्की हैं तो जीवन में परेशानी बेहद कम होंगी और व्यक्ति इन समस्याओं को आराम से झेल लेता है। मध्यम राहु रेखाएं थोड़ा ज्यादा कष्ट देती हैं, लेकिन मोटी राहु रेखाएं व्यक्ति के जीवन में उथल-पुथल मचा देती हैं। राहु की रेखाएं जितनी लंबी होंगी, उसका असर जीवन में उतना ही लंबा होता है।

राहु रेखाएं जहां-जहां तक पहुंचती हैं उनका प्रभाव जीवन के उस हिस्से तक पड़ता है। राहु रेखाएं जितनी लंबी होती हैं उतनी ही परेशानी होती है। यदि राहु रेखा लंबी होकर विवाह रेखा से टकरा जाए तो ऐसे लोगों का वैवाहिक अनुभव बेहद दुखद रहता है। इस तरह के लोगों का वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। हस्तरेखा के अनुसार एक रेखा का प्रभाव दो से चार महीने तक होता है, लेकिन यदि रेखाएं बहुत गहरी हैं तो इनका असर दो से ढाई साल तक रहता है। यदि राहु रेखा से टकराकर भाग्य रेखा रुक जाए तो ऐसे व्यक्ति का काम-धंधा पूरी तरह से चौपट हो जाता है। यदि राहु रेखा टकराने के बाद भाग्य रेखा आगे बढ़ती रही तो ऐसे व्यक्ति समस्याओं से जल्दी बाहर आ जाता है। इस स्थिति में राहु रेखा व्यक्ति के जीवन को प्रभावित तो करती हैं, लेकिन इसके बाद आगे का जीवन व्यक्ति फिर से खड़ा हो जाता है। लेकिन यदि राहु से टकराने के बाद भाग्य रेखा आगे ना बढ़े तो व्यक्ति का जीवन अच्छा नहीं रहता। इस तरह के लोगों का काम-धंधा लगभग बंद हो जाता है।

स्कोडा ऑटो इंडिया ने भारत के औरंगाबाद में शुरू किया नई कोडियाक का उत्पादन

मुंबई। आईपीटी नेटवर्क

स्कोडा ऑटो ने औरंगाबाद, महाराष्ट्र में अपनी विनिर्माण सुविधा में नई कोडियाक के उत्पादन की शुरूआत की घोषणा की है। कोडियाक वर्ष 2017 में पहली बार भारत और दुनिया के सामने पेश हुई थी और उसकी बिक्री की सफलता को देखते हुए उसे नये फीचर्स, नये लुक्स, दमदार और सक्षम इंजन दिये गये। साथ ही ग्राहक के संतोष का वही स्तर बनाये रखा गया, जिसके लिये इस चेक कारमेकर की पहली ग्लोबल एसयूवी मशहूर है।

'ताकत में खूबसूरती होनी चाहिए' की विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए कोडियाक के बाहर और केबिन में कई डिजाइन और एयरोडाइनैमिक सम्बंधी सुधार किये गये हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित एमक्यूबी प्लेटफॉर्म पर बनी कोडियाक एसयूवी सुरक्षा, ड्राइविंग के डाइनैमिक्स , आरामदेयता और टेक्नोलॉजी के मामले में और भी मजबूत हुई है।

स्कोडा ऑटो फॉक्स वैगन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री गुरप्रताप बोपाराय ने कहा कि, 'नई कोडियाक भारत में हमारे ग्रुप की एसयूवी के लिये समग्र पेशकश का हिस्साफ है। औरंगाबाद की हमारे विश्वेस्तरीय कारखाने में उत्पादन शुरू करके हमने एक और उत्पाद जोड़ा है, जो भारतीय ग्राहक को सर्वश्रेष्ठ टेक्नोलिॉजी, सुरक्षा और आराम देता है। नई कोडियाक भारत में लगातार बढ़ रहे उन ग्राहकों को पसंद आएगी।

इस घोषणा पर स्कोडा ऑटो इंडिया के ब्राण्डन डायरेक्टएर, श्री ज़ैक होलिस ने कहा कि, 'नई कोडियाक वह दूसरी एसयूवी है, जिसे स्कोडा इस साल भारत में पेश करेगा। हमारा मानना है कि नई कोडियाक के प्रस्ताव को डिजाइन और खूबसूरती के पारखी पसंद करेंगे एवं इसकी और ज्यादा तारीफ़ करेंगे। विगत वर्षों में कोडियाक को मिली बेहतरीन सफलता ने हमारे इस सिद्धांत को पुख्ता किया है कि 'ताकत में खूबसूरती होनी चाहिये'। कोडियाक भारत में ग्राहकों को उत्पादों का एक पूरा पोर्टफोलियो प्रदान करने के हमारे विचार को आगे बढ़ाती है।'

शुरुआती कारोबार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 21 पैसे फिसलकर 76 से नीचे

मुंबई। एजेंसी

कोरोना वायरस के नये स्वरूप ओमीक्रोन से घरेलू स्तर पर चिंताओं तथा मजबूत विदेशी फंड बहिर्वाह से बुधवार को शुरुआती सौदे में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 22 पैसे फिसलकर 76 से नीचे पहुंच गया। विदेशी मुद्रा व्यापारियों के अनुसार, घरेलू शेयर बाजार में सुस्त रुख तथा मजबूत अमेरिकी मुद्रा का घरेलू स्तर पर भी असर पड़ा जिससे रुपये में गिरावट देखी गई।अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय में डॉलर के मुकाबले रुपया खराब शुरुआत के साथ 76.05 पर खुला। यह बाद में 76.10 के निचले स्तर पर पंहुचा गया जो पिछले बंद के मुकाबले 22 पैसे की गिरावट दर्शाता है। इससे पिछले कारोबारी सत्र में रुपया 10 पैसे की गिरावट लेकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 18 महीने के निचले स्तर 75.88 पर बंद हुआ था। व्यापारियों का कहना है कि रुपये में गिरावट का कारण कोरोना वायरस के नए स्वरुप ओमीक्रोन के तेजी से फैलने की आशंका भी है। देश में इस स्वरुप के अब तक 61 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। इस बीच, छह प्रमुख मुद्राओं की तुलना में डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की गिरावट लेकर 96.51 पर पहुंच गया।

भारत और यूएई संबंधों के लिए अगला दशक निर्णायक, कारोबारी उठाएं फायदा

दुबई। एजेंसी

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि सरकार ढांचा तैयार कर मौके बना रही है। कारोबारियों को इसका फायदा उठाना चाहिए। दो दिवसीय इंडिया ग्लोबल फोरम के संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) संस्करण की शुरुआत के दौरान गोयल ने कहा, मैंने दुबई एक्सपो-2020 में अवसर बनते देखा है। मुझे भरोसा है कि दोनों पक्षों की कारोबारी इकाइयां इस मौके का लाभ उठाएंगी। इससे लोगों के स्तर पर आपसी रिश्ते और मजबूत होने वाले हैं। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि अगला दशक भारत और संयुक्त अरब अमीरात के संबंधों में एक निर्णायक दशक होने जा रहा है। इसलिए हमें साझेदारी की भावना से काम करना चाहिए। उद्योग, शिक्षा क्षेत्र एवं सरकार सभी को इस दोस्ती के बंधन को मजबूत करने पर जोर देना चाहिए। साथ ही इसे एक महत्वपूर्ण रणनीतिक भागीदारी का रूप देने के लिए साझेदारी की इसी भावना से काम करने देना चाहिए।

विकास पथ पर लौट रही अर्थव्यवस्था

विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी के कारण आई मंदी से उबरकर तेजी से विकास पथ पर लौट रही है। भारत के व्यापार आंकड़े आशाजनक हैं। चालू वित्त वर्ष में देश में 81.72 अरब डॉलर का एफडीआई आया है, जो सर्वाधिक है। श्रृंगला ने कहा, विभिन्न देशों से व्यापार समझौतों पर बातचीत के लिए जोर दिया गया है। यूएई, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ, इस्राइल समेत कई देशों के साथ इस पर बात जारी है। संबोधन में उन्होंने आर्थिक खुलापन, सुशासन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए सरकार के पिछले कुछ वर्षों में शुरू किए गए महत्वाकांक्षी ढांचागत सुधारों का भी जिक्र किया।

अदाणी ने एसईसीआई के साथ दुनिया के सबसे बड़े ग्रीन पीपीए पर हस्ताक्षर किए

अदाणी ग्रीन एनर्जी 4,667 मेगावाट की आपूर्ति करेगी

अहमदाबाद। आईपीटी नेटवर्क

दुनिया के सबसे बड़े सोलर एनर्जी डेवलपर और डायवर्सिफाईड अदाणी ग्रुप की रिन्यूएबल एनर्जी ब्रांच, अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल), ने 4,667 मेगावाट हरित बिजली की आपूर्ति के लिए सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एसईसीआई) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह दुनिया का अबतक का सबसे बड़ा हरित बिजली खरीद समझौता है। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन श्री गौतम अदाणी ने कहा कि 'हमें एसईसीआई के साथ दुनिया के सबसे बड़े पीपीए पर हस्ताक्षर करने की खुशी है।यह भारत के दोहरे उद्देश्य को पूरा करने के लिए उठाया गया कदम है, जिसमें भारत के रिन्यूएबल एनर्जी फुटप्रिंट्स में तेजी लाने के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम के तहत घरेलू मैन्यूफैक्चरिंग को बढ़ावा देना शामिल है। सीओपी26 की कार्यवाही को देखते हुए, यह तेजी से स्पष्ट हो रहा है कि जैसा पहले विचार किया गया था, उससे तेज गति से और न्याय संगत रूप से दुनिया को कम कार्बन वाली अर्थव्यवस्था में बदलना है। यही कारण है कि अदाणी ग्रुप ने रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र में 50-70 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करने की प्रतिबद्धता दर्शाई है। यह समझौता हमें 2030 तक दुनिया की सबसे बड़ी रिन्यूएबल एनर्जी कंपनी बनने की हमारी प्रतिबद्धता के भी अनुरूप है।' 4,667 मेगावाट की आपूर्ति के लिए एजीईएल-एसईसीआई समझौता जून 2020 में एसईसीआई द्वारा एजीईएल को अवार्ड किए गए 8,000 मेगावाट की एक मैन्यूफैक्चरिंग-लिंक्ड सौर निविदा का हिस्सा है, जिसने दुनिया की अबतक की सबसे बड़ी सौर विकास निविदा होने का रिकॉर्ड बनाया। अबतक, एजीईएल ने 2020 मेंअवार्ड किए गए 8,000 मेगावाट में से 6000 मेगावाट की कुल उत्पादन क्षमता के लिए एसईसीआई के साथ पीपीए पर हस्ताक्षर किए हैं।उम्मीद है कि शेष 2000 मेगावाट के लिए भी एजीईएल अगले दो से तीन महीनों में पीपीए पर हस्ताक्षर करेगी।

आसुस ने क्रिएटर्स समुदाय को समर्पित भारत का पहला प्रोआर्ट सीरीज लैपटॉप लॉन्च किया

भारत। ताइवान की प्रमुख टेक कंपनी, आसुस ने भारत के पहले प्रोआर्ट सीरीज लैपटॉप के लॉन्च के साथ अपने उपभोक्ता पीसी लाइनअप का विस्तार करने की घोषणा की। रचनात्मक बढ़त प्रदान करने वाले कॉन्टेंट क्रिएटर्स और उपभोक्ताओं के लिए डिज़ाइन की गई, आसुस की प्रोआर्ट सीरीज में आसुस डायल और टचपैड के रूप में इंडस्ट्री-फर्स्ट इनोवेशन हैं जो स्टाइलस का सपोर्ट कर सकते हैं। फ्लैगशिप प्रोआर्ट स्टूडियोबुक 16 ओएलईडी के साथ, आसुस ने एएमडी/इंटेल और 14 इंच/16 इंच वेरिएंट में वीवोबुक की एक सीरीज भी लॉन्च की है, जिसमें वीवोबुक प्रो 14 और वीवोबुक प्रो 15 ओएलईडी, वीवोबुक प्रो 14एक्स ओएलईडी, और वीवोबुक प्रो 16एक्स ओएलईडी शामिल हैं, जो उपभोक्ताओं के लिए व्यक्तिगत पसंद चुनने की सुविधा प्रदान करते हैं। प्रोडक्ट की कीमत 75,000 रुपये से शुरू होती है और 14 दिसंबर से ऑनलाइन (आसुस ई-शॉप/अमेजन/फ्लिपकार्ट और ऑफलाइन आसुस एक्सक्लूसिव स्टोर्स/आरओजी स्टोर्स/क्रोमा/विजय सेल्स/रिलायंस डिजिटल) चैनलों पर बेची जाएगी। प्रोआर्ट स्टूडियोबुक की रेंज जनवरी से उपलब्ध होगी।आसुस ने न केवल अद्वितीय सौंदर्यशास्त्र बनाने के लिए, बल्कि शक्तिशाली परफॉरमेंस और उत्कृष्ट यूजर एक्सपीरियंस प्रदान करने के लिए, प्रत्येक प्रोआर्ट प्रोडक्ट में नई डिजाइन और अत्याधुनिक तकनीकों को शामिल किया है। क्रिएटर सीरीज पीसी के अलावा, आसुस ने आसुस प्रोआर्ट लैब की भी घोषणा की है, जो पूरी इंडस्ट्री में उभरते और स्थापित क्रिएटर्स के लिए साथ आने, साझा करने और सीखने का एक समर्पित कार्यक्रम है। नए कलाकारों, डिजाइनरों, म्युजिक प्रोड्यूसर्स, क्रिएटर्स के लिए एक अनूठा कार्यक्रमहै, जो उभरते हुए क्रिएटर्स को उद्योग में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ प्रदान करके प्रोत्साहित करने और प्रशिक्षित करने के लिए एक इनोवेटिव प्लेटफॉर्म प्रदान करते हैं। आसुस प्रोआर्टलैब 22 दिसंबर 2021 को अपने पहले सत्र के साथ लाइव होगी।

अब आपकी भाषा में होगा आपका आधार कार्ड , इस तरह तुरंत करें बदलाव

नई दिल्ली। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा जारी किया गया आधार कार्ड बेहद ही महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक है जो हर भारतीय नागरिक के पास होना अनिवार्य है। वित्तीय लेनदेन से लेकर सरकार द्वारा दिए जा रहे प्रोग्राम्स तक यह कई चीजों के लिए काम आता है। आधार कार्ड की जानकारी आमतौर पर अंग्रेजी भाषा में ही होती है। लेकिन ने हाल ही में एक अपग्रेड किया है जिसके चलते आप अब अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं में अपना आधार जनरेट कर सकेंगे।

लेटेस्ट अपडेट के अनुसार, आधार कार्ड अब पंजाबी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, हिंदी, बंगाली, गुजराती, मलयालम, मराठी, उड़िया और कन्नड़ में उपलब्ध होगा। अगर आप अपने आधार कार्ड की भाषा बदलना चाहते हैं, तो आप ऑनलाइन फॉर्म भरकर ऐसा कर सकते हैं। आप आधार सेवा केंद्र पर जाकर या ऑनलाइन आवेदन करके अपने आधार नंबर में बदलाव का अनुरोध कर सकते हैं।

ASSOCIATION OF INDUSTRIES MADHYA PRADESH
INDIAN PLASTPACK FORUM
FUTURE COMMUNICATIONS
MEDIA PARTNER
इंडियन प्लास्ट टाइम्स

YOU ARE CORDIALLY INVITED AT
Central India's Largest SME Exhibition
Industrial ENGINEERING EXPO
CONCURRENT EVENTS
IND PHARMA & LABMECH expo
PLAST PACK & PRINT EXPO 2021
INDORE 17 18 19 20 DEC 2021
LABHGANGA EXHIBITION CENTRE
NEAR STAR SQUARE,NEXT TO HOTEL THE PARK, BEFORE BEST PRICE MALL, BY PASS
9826887300, 9826497000, 9981224262
futuretradefairs@gmail.com, industrialenggexpo@gmail.com | www.eng-expo.in
ALL COVID-19 PROTOCOLS ARE IN PLACE / ENTRY ONLY FOR FULLY VACCINATED

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक सचिन बंसल द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13, प्रेस काम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 18, सेक्टर-डी-2, सांवेर रोड, इंडस्ट्रीयल एरिया, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- सचिन बंसल

सूचना/चेतावनी- इंडियन प्लास्ट टाइम्स अखबार के पूरे या किसी भी भाग का उपयोग, पुनः प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना संपादक की अनुमति के करना वर्जित है। अखबार में छपे लेख या विज्ञापन का उद्देश्य सूचना और प्रस्तुतिकरण मात्र है। अखबार किसी भी प्रकार के लेख या विज्ञापन से किसी भी संस्थान की सिफारिश या समर्थन नहीं करता है। पाठक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए स्वविवेक से निर्णय करें। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र इंदौर, मप्र रहेगा।